वेद-अंश हैं, उसी भाँति जैसे भगवद्गीता पंचम वेद—महाभारत का अंश है। इनसे भगवत्-परायण जीवन का उपक्रम होता है।

जब तक प्राकृत देह विद्यमान है, तब तक गुणमय कर्म तथा कर्मबन्धन बनते रहेंगे। अतएव मनुष्य को चाहिये कि सुख-दुःख, शीत-ग्रीष्म आदि को सहन करने का अभ्यास करके हानि-लाभ की चिन्ता से मुक्त हो जाय। पूर्णतया कृष्णभावनाभावित होकर सर्वतोभावेन श्रीकृष्णकृपा की आश्रयता ग्रहण कर लेने पर यह शुद्ध सत्त्वमयी अवस्था प्राप्त होती है।

यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके।
15.2
तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः।।४६।।

यावान्=जितना भी; **अर्थः**=प्रयोजन; **उदपाने**=जलकूप में; **सर्वतः**=सर्वविध; **संप्लुतोदके**=महान् जलाशय से; **तावान्**=इसी भाँति; **सर्वेषु**=सम्पूर्ण; **वेदेषु**=वैदिक शास्त्रों में; **ब्राह्मणस्य**=परब्रह्म श्रीकृष्ण के; **विजानतः**=पूर्ण ज्ञानी का।

अनुवाद

छोटे जलाशय से सिद्ध होने वाले सभी प्रयोजन बड़ी जलराशि से तुरन्त पूर्ण हो जाते हैं। इसी प्रकार, वेदों का आन्तरिक तात्पर्य जानने वाले के लिये उनके सब प्रयोजन पूर्ण हो जाते हैं।।४६।।

तात्पर्य

वैदिक कर्मकाण्ड में प्रतिपादित कर्मों तथा यज्ञों का उद्देश्य शनैः-शनैः स्वरूप-साक्षात्कार की ओर मनुष्य को प्रेरित करना है। स्वरूप-साक्षात्कार का लक्ष्य भगवद्गीता के पन्द्रहवें अध्याय (१५:१५) में स्पष्ट किया गया है—'वेद-अध्ययन का लक्ष्य जगत् के आदिकारण भगवान् श्रीकृष्ण को जानना है।' अतः स्वरूप-साक्षात्कार का अर्थ है—श्रीकृष्ण एवं उनसे अपने नित्य-सम्बन्ध का ज्ञान। श्रीकृष्ण से जीवात्मा का जो सम्बन्ध है, उसका उल्लेख भी गीता के पन्द्रहवें अध्याय में है। जीवात्मा श्रीकृष्ण के भिन्न-अंश हैं, इसलिए उनके द्वारा अपने हृदय में सोयी कृष्णभावना को फिर से जागृत कर लेना ही वैदिक ज्ञान की परम सिद्धि है। श्रीमद्भागवत (३.३३.७) में प्रमाण हैः

अहो बत श्वपचोऽतो गरीयान् यज्जिह्वाग्रे वर्तते नाम तुभ्यम।
तेपुस्तपस्ते जुहुवुः सस्नुरार्या ब्रह्मानूचुर्नाम गृणन्ति ये ते।।

'हे प्रभो! आपके नाम का संकीर्तन करने वाले का जन्म चाहे चाण्डाल जैसे नीच कुल में ही क्यों न हुआ हो, परन्तु वह आत्मतत्त्व के परमोच्च स्तर को पा चुका है। ऐसा पुरुष वैदिक-कर्मकाण्ड के अनुसार अवश्य सब तप-यज्ञ कर चुका होगा और सब तीर्थों में स्नान करके उसने बहुधा वेद-स्वाध्याय भी अवश्य किया होगा। वह वास्तव में आर्यश्रेष्ठ है।' अतः कर्मों तथा श्रेष्ठ विषय भोग के लिए स्वर्गारोहण करने में ही आसक्त न रहकर बुद्धि के सदुपयोग से वेदों का यथार्थ तात्पर्य जान लेना चाहिए। इस युग के मनुष्यों के लिए कर्मकाण्ड के सम्पूर्ण विधि-नियमों तथा